

* उपसर्ग *

* मूल शब्द के पीछे उपसर्ग जोड़ दिया जाता है। उन्हें कहते हैं — उपसर्ग।

उपसर्ग:- आ, अव, उप, अप, अपि, अभि, अति, अधि, अनु, सम्, सु, नि, वि, निर्- निट्, दुर्, दुस्, प्र, परा, प्राति, परि।

Ex = प्रहार = प्र + हार

उपसर्ग मूलशब्द

Note = एक शब्द में दो उपसर्ग भी लिखकर दें।

अप्रत्याशित = अ + प्रत्याशित

प्रति + आशित (X)

प्रति + आशा + इति (✓)

उपसर्ग मूलशब्द प्रत्यय

* पीछे जो शब्द बचे उसका अर्थ उसके अर्थ जरूर निभलेना चाहिए।

Some Ex — निर्बल = निर् + बल

दुश्रासन = दुस् + शासन

अभ्यास = अभि + आस

उत्यधित = आति + अधिक

* मायर *

* ये मुलशास्य के पीढ़े लगते हैं — सत्य

* प्रथय भेदः — ① कृपन्त ② तद्विदत

* धातु के अंत में छुड़े कहते — कृपन्त

* धातुओं को होड़ शीष शब्दों में लगी - टदित
(संज्ञा, विशेषण)

$$Ex = \text{भलाई} = \text{भला} + \text{आई}$$

धूमकेट = धूमना + केट.

Note = कभी-कभी छक्के प्रश्न में दो प्रत्यय भी होते हैं।

$$Ex = \text{समझपारी} = \underset{\downarrow}{\text{समझ}} + \underset{\substack{\uparrow \\ \text{मूँशध}}}{{पार}} + \underset{\substack{\uparrow \\ \text{स्वयं}}}{ई}$$

रस (Sentiments)

- * रस का शाविदकु अर्थ — आनंद
- * काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती है — रस
- * काव्य की आत्मा उड़िने माना गया — रस

रस के भाँग → रस के 4 भाँग हैं।

(1.) → स्थायी भाव — प्रख्यान भाव / मुख्य भाव (उद्धीष्ट)

→ स्थायी भावों की सं० → 9

→ रस का आधार इसे ही उष्टुते हैं।

Note: → लाद के अन्तर्यामी ने 2 स्थायी भाव और
जोड़ दिये = $9+2=11$ (हो गये)

(2) → विभाव → स्थायी भाव को जाग्रत करने (उद्दीपक)

विभाव करने वाले कारणों को विभाव कहते।

उपरांत के हीरे → आलंबन विभाव → जिसका स्पष्टारा पाकर
स्थायी भाव जाग्रत होते।

उद्दीपन विभाव → जाग्रत हुए स्थायी भाव
को और उद्दीप्त (मबल) कहते।

(3) → अनुभाव → मनोगत व्यवहार को व्यक्त करने वाले

शारीर विकार की अनुभाव उष्टुते हैं।

अनुभावों की सं० 8 मानी गई।

(4) → संचारी भाव / व्यभिचारी → मन में संचरण करने

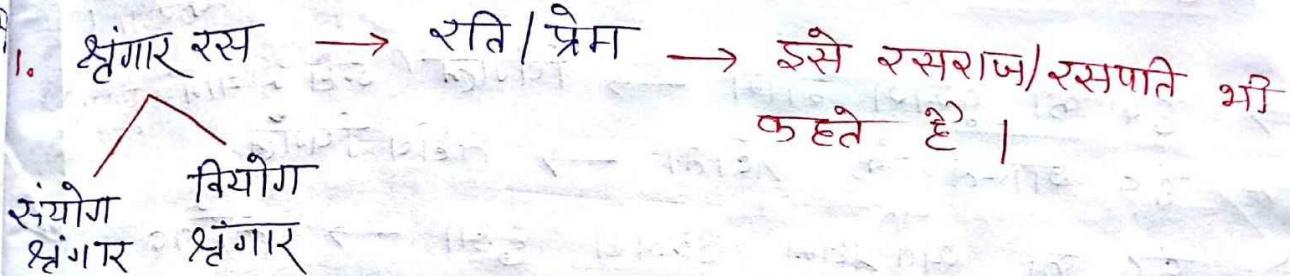
वाले मावों को संचारी भाव कहते।

संचारी भावों की सं० 33 मानी गई।

रस के प्रकार:-

स्थायी भाव

रस



1. धृतिगार रस → रति/प्रेम

2. हास्य रस → हास

3. करुणा रस → शोक

4. वीर रस → उत्साह

5. रौद्र रस → क्रोध

6. भयानक रस → भय

7. वीभत्स रस → बुगुप्ता/घृणा

8. अद्भुत रस → आश्चर्य/विभय

9. शांत रस → शाम/निर्वेद

10. वात्सल्य रस → वात्सल्य रति

11. भवित रस → भगवद् (अनुसारा)

* भरत मुनि ने उत्तरे रसों का वर्णन अपने नाट्यशास्त्र में किया → 8

* अभिनव गुप्त ने उत्तरे रस माने → प्र(नवमोऽपि शान्ते रसः)
उन्होंने इसे उत्तरे माना गया → शांत रस

* नाट्यशास्त्र का प्रथम अन्तार्य उत्तरे माना गया → भरत मुनि

* रस संप्रदाय का प्रतिलिपि कहते → भरत मुनि

* हिंदी में रसबादी ज्ञात्वेचिक है → आः राम्यन्त्र शूल,

— : हृद : —

- ⇒ हृद शब्द "हृद" व्यातु से बना, जिसका अर्थ है - खेल करना।
- ⇒ हृद का दूसरा नाम → पिंगल (इन्हीं के नाम से जाए)
- ⇒ हृद शास्त्र के प्रतीत → त्रैष्णि पिंगल नाल
- ⇒ हृद का सर्वप्रथम उल्लेख हुआ → तत्त्ववेद
- ⇒ हृद का अर्थ है → बन्धन अन्धजयुक्त पद की स्थन को कहते → हृद

हृद के अंग → 6 अंग हैं।

1. गर्भ/माता → उत्त्वस्त्र (मधु) → चिन्द = (1) छमात्रा पढ़ी।
 (अ, इ, उ, औ)
 दीर्घस्त्र (गुरु) → चिन्द = (5) द्वी मात्रा पढ़ी।
 (आ, ई, ऊ, ओ)

नोट → उल्लंघन की गणना नहीं की जायेगी।

2. पाद/चरण → प्रत्येक हृद में 4 चरण होते ही हैं,
 इदः हृद में 6 चरण भी हैं। (कुण्डलिया, ६५)

3. यति (तिराम) → हृद पढ़ते हुए कहीं रुकना पड़ता है,
 उसे यति (तिराम) कहते। चिन्द - (1), (३), (१)

4. गाति → हृदों की पढ़ते लम्य यिस स्थाय की अनुभूति

5. तुकु → हृदों के पद के अन्त में जो अक्षरों की समानता हो, उसे तुकु कहते।

6. गाठ → लघु-गुरु के कूम को बनाये रखने के लिए गाठों का प्रयोग होता है। गठ ४
 प्रकार के होते हैं — (विंशति हृद की विशेषता है यह)

जग होते हैं : - (सूच = प्रमातुराप्यभान् सलगा)

यगण = यमाता

मगण = मातीरा

तगण = ताराप्य

रगण = राघभा

जगाओ = जभान

भगाओ = भानस

नगाओ = नसल

सगाओ = सलगा

6x = १०. निम्न शब्द में कौन सा गाओ हैं -

= सागर = भगाओ

नवल = नगाओ

साधना = रगाओ

हृद के मेद : - ३ प्रकार के होते।

(1) वर्णिक हृद. - वर्णों की सं. का विचार

(2) मातिक हृद. - माताओं की सं. का विचार

(3) मुक्त हृद. - वर्णिक / मातिक किसी का भी स्थिरबंध न हो।

* वर्णिक | मातिक | हृद के तीन-तीन मेद : -

(1) सम : - 4-चरणों में (वर्ण/माता) बराबर हो। [चौपाई]

(2) अर्द्धसम : - प्रथम+तृतीय (विषमचरण), द्वितीय+चतुर्थी (समचरण)
में माता/वर्ण की स. बराबर हो। [दोहा]

(3) विषम : - 4/6 चरण हो, माता/वर्ण की स. मिन्न-2 हो
[षट्पद्य / कु०७तिया]

हिन्दी के कुछ प्रमुख हंड

१. मात्रिक हंड

A (सममात्रिक हंड) → कुछ प्रमुख सममात्रिक हंड →

- (a) चौपाई → 4 चरण, प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ।
- (b) रोला → 4 चरण, ($11, 13 = 24$ मात्राएँ)।
- (c) हरिगीतिङा → 4 चरण, प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ।
- (d) बीर/आठवा → 4 चरण, प्रत्येक चरण में 31 मात्राएँ।

Trick - पारो गीत बीर के गाओ।

(B) अहंसममात्रिक हंड → कुछ प्रमुख —

- (a) दोहा → विषम - 13, सम - 11 मात्राएँ = (24 मात्रा)
- (b) सौरका → विषम - 11, सम - 13 मात्रा = (24 मात्रा)
- दोहे का उत्तर होता।
- (c) छरवै → विषम - 12, सम - 7 मात्रा = (19 मात्राएँ)
- (d) उल्लाला → विषम - 15, सम - 13 = (28 मात्रा)

विषममात्रिक हंड → प्रमुख —

- (c) विषममात्रिक हंड → प्रमुख —
- (a) झोड़लिया → (दोहा + रोला) → 6 चरण (भिन्न)
- (b) धृष्ण्य → (रोला + उल्लाला) → 6 चरण "

— अलंकार —

* अलंकार का शाहिदकु अर्थ → आश्रूषण
 काव्य की शीभा बदाने वाले को कहते — अलंकार
 संस्कृत के अलंकार संप्रवाय के प्रतिष्ठापक
 कींग ये → वठडी -

* काव्य शीभा करान् यमनि अलंकारान् प्रचक्षते
 → अस्याय दृढी

* हिन्दी के कौन-से कवि अलंकार वाली हैं — के शब्द
 कौन- उस विद्वान् ने अलंकारों की विधति को
 आवश्यक नहीं माना → अस्याय ममट

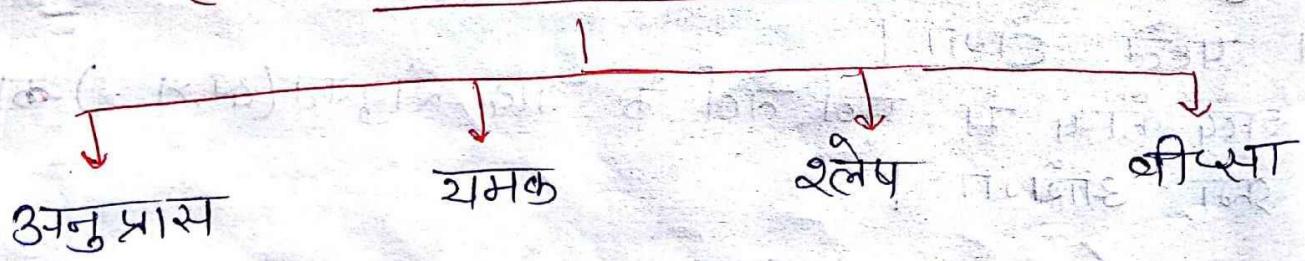
* अलंकार मुख्यतः २ प्रकार के होते हैं —

(i) → शब्दालंकार (जो शब्दों के सौंदर्य पर प्रकाश हो)

(ii) → अष्टकिंकार (जो अर्थों के सौंदर्य पर प्रकाश हो)

Note → परन्तु कभी- कभी उक्त अलंकार को और
 जोड़ दिया जाता है — उभयालंकार/अस्य
 पाश्चात्य अलंकार

(i) → शब्दालंकार के प्रकार



A) अनुप्रास अलंकार → व्यंजन वर्णों की आवृत्ति
→ द्वेषकानुप्रास → अनेक व्यंजनों की अवृत्ति लार स्कम्भातः
व अभितः आवृत्ति (केवल २ बार आठ)
Ex- बंदूक गुरु पद पद्म परागा।

सुखि सुषास सरस अनुशागा।

→ वृत्यनुप्रास → एक/अनेक वर्णों की आवृत्ति दीया दी से
अधिक लार →

Ex- चारू चन्द्र की चंचल किरणों
रवैल रही जल धल में

→ धृत्यनुप्रास → क०४- तालु लकु ही थान से उत्थारित वर्णों
की आवृत्ति →

Ex- शमकृपा भव निधा सिरानी जागे फिर न इसीहै
दृष्टि

→ लालनुप्रास → जहाँ एक शब्द की आवृत्ति ही -

Ex- फूल भपूत तो क्यों धन संचर्ये।

→ अन्यानुप्रास → दुकान्त शब्दों का प्रयोग
Ex- बहरस लाल्य लाल की - मुरलीधरी लंकाई।
भीह करै भीहनु हसीं दैन लहै नदिखाई।

3) यमतु अलंकार → जब कोई शब्द अनेक बार आँ
— — — और प्रत्येक बार अलग अस्ति

Ex - कनकु कनकु ते सौं हुनी,
↓ ↓
सोना स्वतुरा

(C) इलेष अलंकार → कोई शब्द विना आवृत्ति के आ
— * — हुठ कई अर्थों प्रकट करे।

Ex - रहिमन पानी राखिहा, विन पानी सब सून।
पानी गा न ऊबैर, मीरी मानुष चून॥
└ ज्ञानक, प्रतिष्ठा, जल

(d) वीप्सा अलंकार → मनोभावों की प्रकट करे
— x — के लिए —

Ex - हि: - पुप, दिखो, सुनी।

(ii) अथलिंकार → इसमें कई भैद हैं, पर मुख्यतः
कुछ इस प्रकार हैं: —

- उपमा
- संदेह
- उत्प्रेरक्षा
- रूपक
- अतिशयोनित
- भ्रातिमान
- विरोध्या भास

(A) उपमा अलंकार → समान व्यामी, हुना, व्यवधान आदि। जहाँ हुक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाए —

उपमा के चार अंग -

- Q) i) उपमेय - जिसकी उपमा दी जाय
ii) उपमान - जिससे उपमा की जाय
iii) वाचक - जिस शब्द से उपमा प्रकट की जाय
iv) समान धर्म - जिस हुण को लैकर उपमा दी जाय।

Ex — सीता का मुख कमल के समान सुन्दर है।
उपर्युक्त उपमान वाचक समानाधार

B) संदेह अलंकार → उपमेय में उपमान का संदेह
 (उिसी वस्तु को देखकर अन्य वस्तु
 के संशय हीने का आभास)

Ex- सारी लीच नारी हैं. यि नारी लीच सारी हैं,
~~यि सारी ही नारी हैं, यि नारी ही सारी है।~~

c) उत्प्रेरणा अलंकार → उपर्युक्त में उपमान की सम्भावना की खात -

Ex - मुख मानी - घन्टे हैं

उत्प्रेक्षा अंल कार पट्टचानके के लिए :— मानी, मनहुँ, जनु, घनहुँ, मनू, इव मनो

मादि बच्क शब्द माये वहाँ उप्रेक्षा भवंतर होगा।

(i) रूपड़ अलंकारः — जहाँ उपर्युक्त और उपमान को एक ही रूप मान लिया जाए।

Ex - मुख चन्द्र है।

(ii) अतिशयोक्ति अलंकारः — जहाँ उसी बात की बहुत बड़ी व्याप्ति कर लहजा-

Ex - हनुमान की पूँछ में लगन न पायी आगि।
भगवान् लंग जल गई, गयी निसाचर भर्गि

(f) आतिमानः — जहाँ सादृश्य के आधार पर उिली वस्तु को कोई और वस्तु समझ ली जाए।

Ex - मुझ्हा तब मम्मी के सर पर, देख-देख दी चौही
भाग उठा भय मानकर सर पर
साँपिय लौटी।

(G) विरोधाभास → दी वस्तुओं में विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास।

Ex - मीठी लगे अँखियान लुनझे।

(ii) उभयालंकार (आधुनिक)
पारचालक अलंकार

→ भानवीकरण
→ व्यावधारणा
→ विशेषण विपर्यय

— पतिकाँह — (भारते न्हु युग)

पतिका

सम्पादक

स्थान

कृष्णन सुधा
हरिश्चन्द्र मींगनीज
बाल - गीविनी

भारते न्हु हरि०

→ काशी

हिन्दी प्रवीप

बालवृष्ण मटू

इलाहाबाद

आनन्द कादम्बनी

बद्री-रायण "प्रेमघन"
वीधरी

मिजपुर

ब्राह्मणा

प्रतापनारायणमिष्ट

~~मिजपुर~~
कानपुर

(द्विवेदी युग पतिका)

सरस्वती

मध्य० प्रसाद - द्विवेदी

इलाहाबाद

सुपर्णि

देवकी नन्दन खत्ती/माधवप्रसाद

काशी

समालोचक

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

जयपुर

इन्हु

अग्निका प्रसाद गुप्त

काशी

मयदि०

कुष्णकान्त मालवीय

प्रयाग

चौंद

शम्भुख सद्गल/चौडीप्रसाद

प्रयाग

मास्युरी

दुलारे लाल भागवि

लखनऊ

IMP → मयदि० (मासिक पतिका)

दुड़े (अंग्रेजी ०१)

डॉ० सम्पूर्णनिंद

द्यायावादी सुग - (पर्वतकर्ष)

हँस → प्रेमकन्द → काशी

कमरीर → मारुन लाल चतुर्वेदी - जबलपुर

चौप → महादेवी बर्मी → प्रयाग

साहित्य संदेश → लालु गुलाबराय → अगरा

द्यायावोल्तर सुग -

काढ मिलनी → राष्ट्र-मवर्षयी → फिल्मी

धमचुग → धमरीर भारती → समर्द्दि

नया जीवन → कन्हीयालाल मिष्ठ प्रभाऊ → सहरनपुर